IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, August 2025 Impact Factor: 7.67

# गुप्त शासकों के अभिलेखों में पर्यावरणः मध्यप्रदेश के संदर्भ में

प्रहलाद साकेत
शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म०प्र०)

**सारांश**

गुप्त शासको ने सम्पूर्ण देश कों राजनीतिक एकता के सूत्र मे ं बांधने का कार्य किया जिसकी पुष्टि समुंद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के "धरणीबंध" शब्द से होती है। धरणीबंध शब्द का अर्थ सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना होता हैं। गुप्त शासकों ने लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया जिसमें उन्होंने अपने साम्रज्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक उन्नति की जिसके प्रमाण हमें उनके द्वारा निर्ग त अभिलेख एवं मु द्राओं के माध्यम से मिलता है। मध्यप्र देश से गुप्तकालीन शासकों के 11 साथ ही साथ उनके सामं तों के भी 11 अभिलेख प्राप्त हुए है। इन अभिलेखों के माध्यम से गुप्तकलीन सांस्कृ तिक जीवन के साथ ही साथ पर्या वरण से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है। कु मारगुप्त प्रथम के मं दसौर प्रशस्ति में दशपुर नगर की प्राकृ तिक सुं दरता का वर्णन दर्शनीय है। जिसके संबं ध मे ं कहा गया है कि जगह–जगह पर पुष्पित, पल्लवित वृक्ष समूह थे, विकसित कमलों एवं कूजते हुऐ हंसो से शोभायमान सरोवर थे। सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से प्राप्त बुधगुप्त के ऐरण स्तंभ लेख में उल्लेख मिलता है कि इस काल में अर्थात बुधगुप्त काल में सुरश्मिचन्द्र नाम का प्रशासक कालिंदी नदी के बीच के प्रदेश में राज्यपाल के रूप में शासन करता था। इस अभिलेख से जान पड़ ता है कि संभवत नदियां प्रान्तों एवं जिलो ं के बीच प्राकृ तिक सीमाएं मानी जाती रही होगी साथ ही नगर एवं गॉव के जलापूर्ति का सर्वप्रमुख स्त्रोत होती थी।

**मुख्य शब्द** – अभिलेख, गुप्त शासक, पर्या वरण, प्रशस्ति, प्रकृति आदि।

कुषाण साम्राज्य के विघटन के पश्चात दे श में एकछत्र शासन की व्यवस्था गुप्त शासकों के द्वारा स्थापित की गई जो भारतीय इतिहास में स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है। गुप्त शासको ने सम्पूर्ण देश को राजनीतिक एकता के सूत्र में बां धने का कार्य किया जिसकी पुष्टि समुंद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति के "धरणीबं ध" शब्द से होती है। धरणीबंध शब्द का अर्थ सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना होता हैं। गुप्त शासकों ने लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया जिसमें उन्होंने अपने साम्राज्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक उन्नति की जिसके प्रमाण हमें उनके द्वारा निर्ग त अभिलेख एवं मु द्राओं के माध्यम से मिलता है। शिलालेखों, स्तंभलेखों, मूर्तिलेखों, ताम्र पत्रों एवं मु द्रालेखों के माध्यम से विवेच्चय काल के सां स्कृतिक उन्नति के विषय मे ं जानकारी मिलती है। जिसके कारण हम गुप्त काल को स्वर्णकाल के नाम से अभिहित करते है। अभिलेखीय सामग्री किसी भी देश के क मबद्ध इतिहास के निर्माण में सहायक है ं। इसीलिए पु रातत्व में अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

मध्यप्रदेश को भारत के ह्रदय प्र दे श के रूप में जाना जाता हैं। मध्यप्रदे श से मानव की उत्पत्ति एवं विकास से लेकर विशालकाय मंदिर निर्माण तक के अवशेष प्र ाप्त होते है साथ ही यह प्रदेश गुप्तकालीन पुरावशेषों यथा अभिलेख, मुद्राए, मूर्तिकला, स्थापत्य कला की दृष्टिकोण से भी अत्यंत समृद्ध हैं। यहां से गुप्तकालीन शासकों के 11 साथ ही साथ उनके सामं तों के भी 11 अभिलेख प्राप्त हुए है। इसके अलावा गुप्त राजाओं द्वारा निर्ग त करायी मुद्राओं के भी प्रमाण मिलते है। इन मु द्रओं एवं अभिलेखों के माध्यम से गुप्तकलीन सांस्कृ तिक जीवन के साथ ही साथ पर्या वरण से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है। अतः

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, August 2025 Impact Factor: 7.67

किसी भी राजवंश के सुव्यवस्थित सं चालन में पर्या वरणीय दशाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो उनकी जनता, राज्य, व्यापार तथा नीतियों को प्रभावित करती है। पर्या वरण के अं तर्गत पर्वत, पठार, नदिया, जलवायु, पशु–पक्षी आदि को शामिल किया जाता है। मानव पाषाण काल से वर्तमान काल तक लगातार अपने बौ द्धिक क्षमताओं का विस्तार कर रहा है जिसमें पर्या वरण का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस विकास यात्रा में पर्यावरणीय सं साधनों ने सम्पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व को बनाए रखने कार्य किया है। इस लेख मे ं मध्यप्र दे श से प्राप्त गुप्त वंशीय शासकों के अभिलेखों के अध्ययन एवं विश्लेषण के माध्यम से तत्कालीन पर्यावरणीय दशाओं को जानने का प्रयास किया गया है। के मं दसौर प्र शस्ति में भगवान सूर्य के सं बंध में कहा गया है कि जा` उदयांचल गिरी के विस्तृत और उन्नत शिखरों पर अपने रश्मि समू ह को फैलाकर प्रतिदिन प्रदीप्तमान हो ते है, वह सूर्य भगवान आपकी रक्षा करे। यह अभिलेख दशपुर अर्थात वर्तमान मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले से सं बंधित है और मंदसौर अरावली और विंध्य पर्वत क्षेत्र में स्थित है अतः संभावना है कि यह उदयांचल गिरी विंध्य पर्वत को इंगित करता हो, जो आज भी अपनी प्राकृ तिक सुंदरता बिखेरता है। इसी अभिलेख में दशपुर के भवनों की तुलना कै लाश पर्व त के गगनचुंबी शिखरों से की गई है अत तत्कालीन समय में भी कै लाश पर्वत की महत्ता में कमी नही हुई जो सिं धु, सतलज, ब्रम्हपुत्र और करनाली नदियों को सदानीरा बनाता है साथ ही औषधीय विविधता के लिए भी जाना जाता है। इसी अभिलेख में आगे चार समुद्र का भी इस प्रकार वर्ण न मिलता है कि चारो समुद्र की चंचल मेखला और सुमेरू और कैलाश पर्वत के उभरे हुए पर्वत उरोजो वाली वानन्त में गिरे हुए विकसित सुमन समूह रूपी हास वाली पृथ्वी पर जब कु मारगुप्त शासन कर रहे थे उस समय दशपुर के गोप्ता अर्थात राजा विश्ववर्मा का पुत्र बंधुवर्मा थे। यहां पर चार समु द्र का उल्लेख मिलता है जो गुप्तकाल को स्वर्ण काल कहे जाने के पीछे का कारण को दर्शाता है गुप्त काल में विश्व के साथ वाणिज्य एवं व्यापार की उन्नति रही जिसका प्रमु ख आधार समुद्री व्यापार था जिसके कारण गुप्त शासक ने यह गौरव प्राप्त किया। इस अभिलेख के अनुसार गुजरात के लाट नगर में रहने वाले तंतुवाय अर्थात रेशम बुनकर श्रेणी के लोगो का दशपुर मे ं आकर बसने की जानकारी मिलती है। जिसका एक कारण दशपुर प्र देश का प्राकृ तिक वातावरण का मनोरम होना माना गया है। मंदसौर प्रशस्ति मे ं दशपुर नगर के सुंदरता के संबंध में कहा गया है कि यह नगर चंचल लहरों वाली दो नदियो ं से घिरा हुआ है जो ऐसा दिखाई पड़ता है मानो उरोज–वाहिनी प्रीति और रति नाम्नी पत्नियो ं से एकां त मे ं आंलिगन करता हुआ कामदेव का शरीर हो। वर्तमान मे ं भी मंदसौर जिले से चंबल एवं शिवना नदी प्रवाहित होती है जिनका समीकरण तत्कालीन नदियों से करना अनुचित नही होगा ।

सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से प्राप्त बुधगुप्त के ऐ रण स्तंभ लेख में उल्लेख मिलता है कि इस काल में अर्थात बुधगुप्त के शासनकाल में सुरश्मिचन्द्र नाम का प्रशासक कालिंदी नदी के बीच के प्रदेश में राज्यपाल के रूप में शासन करता था। इस अभिलेख से जान पड़ ता है कि संभवत नदियां प्रान्तों एवं जिलों के बीच प्राकृतिक सीमाएं मानी जाती रही होगी साथ ही नगर एवं गॉव के जलापूर्ति का सर्वप्रमु खस्त्रोत होती थी। ऐरण से ही प्राप्त समुद्रगुप्त की ऐरण प्र शस्ति में ऐरण को स्वभोग नगर एरकिण कहा गया है जिसके संबंध में दिने शचन्द्र सरकार ने भोग को कृ षकों द्वारा राजा को फलों फूलो ं सब्जियों व वनस्पति आदि के रूप में दिये जाने` वाले सामयिक भेंट के रूप में स्वीकार करते है इससे जानकारी मिलती है कि गुप्तकाल में जनमानस फूलों एवं वनस्पतियों के औषधीय और सुगंधीय गुणों से साथ ही साथ उनकी विविधता की महत्ता एवं उपयोग से भी परिचित थे जिसके संबं ध में वर्तमान में कई बड़ी संस्था एवं परियोजनाऐ चलायी जा रही है। एरण से ही प्राप्त तोरमाण के अभिलेख में वर्णित है कि वे भगवान (विष्णु) विजयी है, जिनका रूप वराह है जिन्होंने पृथ्वी को जल से उपर उठाकर अपनी कठोर थूथन के प्रहार से पर्वतो को कम्पित कर दिया, तथा तीनो ं लोकों रूपी महान भवन के आधार स्तंभ है। इस अभिलेख में वराह का उल्लेख मिलता है जिनका विष्णु के तीसरे अवतार होने के साथ ही प्राकृतिक संतुलन बनाएं रखने में भी महत्वपूर्ण यो गदान होता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, August 2025 Impact Factor: 7.67

गोविंदगुप्त के मं दसौर अभिले ख में उल्लेख मिलता है कि गुप्त शासको के भूपति प्रभाकर के सेनानायक दत्तभट्ट ने अपने पितरो के प्रति अपना दायित्व निभाने हेतु स्वर्ग सु ख निमित्त सदैव जल से भरे रहने वाले कू प–कु आ सहित स्तूप का निर्माण कराया जो तत्कालीन समय में जल प्रबंधन एवं जल की महत्ता को इंगित करता है। इस कार्य को वर्तमान मे ं जल की महत्ता एवं जागरूकता हेतु एक सं दे श माना जाना चाहिये। इसी अभिलेख मे ं स्तूप बनवाये जाने के साथ ही बिहार एवं उद्यान का भी निर्माण कराए जाने का उल्लेख मिलता है। जो तत्कालीन समय के साथ ही वर्तमान में भी प्राकृ तिक सुंदरता को बढ़ावा दे ते है।

कुमारगुप्त प्रथम के मं दसौर प्र शस्ति में दशपुर नगर की प्राकृ तिक सुंदरता का वणन दर्शनीय है। जिसके सं बंध में कहा गया है कि जगह–जगह पर पुष्पित, पल्लवित वृक्ष समूह थे, विकसित कमलों एवं कूजते हुऐ हं सो से शोभायमान सरोवर थे प्रफुल्लित कु सुमो के द्वारा झुकी हुयी शाखाओं वाले वृक्षों से यह पृथ्वी सुशोभित थी। इन सरोवरों मे ं चंचल लहरों के द्वारा हिलते हुऐ कमलो ं के झरते हुए पराग से हंस भूरे रंग के प्रतीत होते थे तो कही पर अपने ही पराग भार से जल में कमल झु के हुए दिखाई पड़ते थे। यहा कि वाटिकाये पुरंगनाओं की मंद मंथर गति से सुशोभित हो ती थी। जिस प्र कार के वनस्पतिक विविधताओं का उल्लेख इस अभिलेख में किया गया है उसका थोड़ा मिलता स्वरूप वर्तमान में मंदसौर जिले मे ं स्थित गांधी सागर अभ्यारण्य में दे खा जा सकता है जो पक्षी वनस्पति और जै व विविधता क्षेत्र भी है। इस अभिलेख में लो घ्र और प्रियंगु नामक वृक्षों एवं लवी और नगण नामक पु ष्पलताओं का भी उल्लेख मिलता हैं जो वनस्पतियो ं के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के सॉची वेंदिका ले ख में चन्द्रगुप्त द्वितीय के एक अनुसे वक द्वारा भूमिदान का उल्लेख मिलता है साथ ही आदेश किया गया है कि इस भूमि से हो ने वाली आय से पॉच–पॉच भिक्षुओं को भोजन कराया जाए तथा रत्नगृह में द्वीप जलाया जाए इसके साथ ही चेतावनी दी गई कि जो इस व्यवस्था में बाधा डालेगा वह गौ हत्या का भागी होगा तात्पर्य कि गौ–हत्या ऋग्वैदिक काल से लेकर अब तक एक सामजिक एवं धार्मिक अपराध माना जाता रहा जो पर्या वरण में जीवों एवं पशुओं की अस्तित्व के प्रति जागरूकता कों प्रदर्शि त करता है जो वर्तमान परिपे क्ष्य में भी तर्क संगत है। बुधगुप्त के ऐरण स्तंभ लेख में मातृविष्णु एवं धन्यविष्णु नाम के दो भाईयों के द्वारा गरूण ध्वज स्थापित करने के विषय में जानकारी मिलती है। इस स्तंभ लेख में बुधगुप्त को भूपति एवं उसके गवर्नर को सुरश्मि चन्द्र तथा उसके अधीनस्थ मातृविष्णु को महाराज कहकर सम्बोधित किए जाने का उल्ले ख मिलता है। ज्ञातव्य है कि गुप्त वंश का राजकीय चिन्ह गरूण था जिसका प्रमाण इस अभिलेख से प्राप्त होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गरूण भगवान विष्णु का वाहन है साथ ही वह खास विशेषताओं एवं गुणों के कारण पक्षियों का राजा भी माना जाता है, साथ ही वह नकारात्मक उर्जा को दूर करने तथा शांति लाने में भी सहायक माना जाता है, जिसके कारण गरूण कों गुप्तों के राजकीय ध्वज में स्थान प्राप्त हुआ।

कुमारगुप्त के मंदसौर प्रशस्ति में दशपु र नगर की सुं दरता मे ं भवरों के ध्वनि गुंजन के विषय में उल्लेख मिलता है कि यहॉ के वृक्ष अपने ही पुष्पो ं के भार से झुकते हुए तथा मदमत्ता चटुल भ्रमर या भवरे के समूह गुंजन से सु शोभित थे। साथ ही सरोवरों में लहरों द्वारा हिलते कमलों से झरते हुए पराग से हंस भूरे रंग के दीख पड़ते है। उपर्यु क्त उल्लेख में भवरों के गुंजन तथा हंसों की क्रीडाओं के विषय में जानकारी मिलती है। वर्तमान समय में भवरों की प्रजाति विलुप्ति के कगार पर है तथा हंस भी विरले ही दे खने को मिलते है अर्थात तत्कालीन समय में जै व विविधता की स्थिति भी वर्तमान की तुलना में ज्यादा उन्नत अवस्था में थी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, August 2025 Impact Factor: 7.67

इस प्रकार गुप्तकालीन अभिलेखों के अध्ययन तथा विश्लेषण के माध्यम से हमें गुप्तकालीन पर्या वरणीय स्थित का अनुमान हो जाता है। जिसमें हमें उस काल के पर्या वरण के अं तर्गत सूर्य , पर्वत, नदियॉ, पेड़–पौधे, समुद्र,, उद्यान, सरोवर, कु आ, हंस, भवरें, गाय, पुष्प लताएं, गरूड़ आदि के सं बंध महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती । इस प्रकार गुप्तकालीन शासन में कला, स्थापत्य, व्यापार, धर्म , साम्राज्य विस्तार, विज्ञान तथा तकनीकी के उन्नति के साथ ही आदर्श पर्या वरणीय स्थिति तथा जल संरक्षण के महत्व से भी परिचित शासकों तथा जनता का काल रहा है।

| क 0 | विवरण | अभिलेख |
|---|---|---|
| 1 | सूर्य | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 2 | यमुना | बुधगुप्त का एरण स्तंभ लेख |
| 3 | उदयांचल गिरि | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 4 | कैलाश पर्वत | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 5 | चार समुद्र | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 6 | पृथ्वी | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 7 | चन्द्रमा | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 8 | नर्मदा | बुधगुप्त का एरण स्तंभ लेख |
| 9 | कुंआ | गोविंदगुप्त का मंदसौर अभिलेख |
| 10 | पुष्पलताए | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 11 | विहार | गोविंदगुप्त का मंदसौर अभिलेख |
| 12 | वृक्ष समूह | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 13 | सरोवर | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 14 | वनस्पतिया | समुद्रगुप्त की एरण प्रशस्ति |
| 15 | गाय | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 16 | गरूण | बुधगुप्त का एरण स्तंभ लेख |
| 17 | भवरें | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 18 | हंस | कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति |
| 19 | वराह | तोरमाण का एरण अभिलेख |

संदर्भ गंथ सूची

1 बनर्जी, मानबेन्दु, अ स्टडी ऑफ इं पार्ट टे ंट गु प्ता इं सक्प्सं स, संस्कृ त पु स्तक भंडार, कलकत्ता

2 चन्द्र, डॉ० दिनेश, प्राचीन भारतीय अभिलेख, उत्तरप्रदे ंश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

3 डॉ० निहारिका, प्राचीन भारतीय पुरातत्व, अभिलेख एं व मुद्र ाये, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

4 उपाध्याय, डॉ० वासुदे व, गुप्त अभिलेख, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 5 फ्लीट, जे०एफ० कार्पस इंसक्प्सनम इंडीकेरम वोल० 3, इंसक्प्सन ऑफ द अर्ली गुप्ता किंग एंड देयर सक्सेसर, इंडोलाजिकल बुक हाऊस, वाराणसी

6 सिंह, उपिन्दर, अ हिस्ट्री ऑफ एनसियन्ट एंड अर्ली मिडाइवल इंडिया, पियर्सन पब्लिकेशन, नोयडा

7 कनिं घम, अलेक्जेण्डर, रिर्पोट ऑफ अ टूर इन बुंदेलखण्ड एंड मालवा एंड इन द सेन्ट्रल प्रोविन्सेस, वोल० 7 आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया

8 कार्पस इंसक्प्सनम इंडीकेरम वोल० 4, पार्ट 2

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-28630